

# डॉB केनेथ मैथ्यूजÆ उत्पत्तIÆ सत्र ÇDÆ इसहाक का पारिवारिक संघर्षÆ उत्पत्तI ÇDÈÇEÆÇDÈÇ

© 2024 केनेथ मैथ्यूज और टेड हलिडेब्रांट

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज हैं जो उत्पत्तI की पुस्तक पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 16 है, इसहाक के पारिवारिक संघर्ष, उत्पत्तI 25:19-27: 40।

पाठ 16 इसहाक के पारिवारिक संघर्षों से संबंधित है।

अध्याय 25 की आयत 19 में कहानियों की एक नई श्रृंखला है और यह याकूब से संबंधित है। आइए उस आयत 25, आयत 19 को देखें। यह टोलेडोथ है।

आपको याद होगा कि टोलेडोथ पीढ़ियों से चली आ रही एक हबिबू अभिव्यक्ति है। और यह प्रत्येक भाग के लिए कैचफ्रेज या परिचय का हिस्सा है जो संपूर्ण उत्पत्तI को बनाता है। और कुल 11 हैं।

श्लोक 19 अब्राहम के बेटे इसहाक का टोलेडोथ या वविरण है। आइए हम खुद को याद दिलाएँ कि इसहाक एक परिवर्तनशील व्यक्ति है। और इसलिए, हालांकि हम आज इसहाक के पारिवारिक संघर्षों के बारे में बात करेंगे, आप पहचानेंगे कि यह इसहाक के बेटे, याकूब और उसके जुड़वां भाई, एसाव से संबंधित है।

और इसलिए, अब्राहम के बेटे, इसहाक का वविरण वास्तव में हमें अगली पीढ़ी से परिचित करा रहा है, जो याकूब होगा। और यह टोलेडोथ खंड, यह कथात्मक कथन, अध्याय 37, श्लोक 1 तक चलता है। 25, 19 से 37, श्लोक 1। खैर, आइए संक्षेप में समीक्षा करें कि हम इन कई हफ्तों में क्या देख रहे हैं। प्रारंभिक इतिहास या आदिम इतिहास, आप इसे प्रारंभिक मनुष्य और सभ्यता के इतिहास के रूप में सोच सकते हैं, अध्याय 1 से 11 तक होगा।

और हम वहाँ क्या सीखते हैं? हमने सृष्टि, परमेश्वर की अच्छी सृष्टि, उसकी छवि में पुरुषों और महिलाओं की रचना, और परमेश्वर द्वारा मानवता पर इच्छित आशीर्वाद, प्रजनन सहित उनके आशीर्वाद, और फिर परमेश्वर की अच्छी सृष्टि का शासन या प्रभुत्व, जमिंदार पर्यवेक्षण के बारे में सीखा। फिर, दुख की बात है, हम पहले पुरुष और महिला द्वारा बगीचे में किए गए पाप के बारे में सीखते हैं, कैसे आदम और हव्वा को नष्टकामिता किया गया था, और फिर उस पाप के परिणाम जो दुष्टता के बटु तक बढ़ गए थे जिसके लिए बाढ़ की आवश्यकता थी, जिसके बाद हमें बताया जाता है कि बाढ़ के बचे हुए लोग, परमेश्वर ने नूह के साथ जो वाचा बांधी थी, वह अध्याय 19 में पाई जाती है, माफ की जाए, अध्याय 9 में, और फिर वाचा में वही शामिल है जो हमने उत्पत्तI के अध्याय 1 में सुना था, जहाँ परमेश्वर सुनिश्चित करता है कि वे समृद्ध होंगे। अब, इसने बाबेल के गुम्मत, राष्ट्रों के निर्माण, और फिर राष्ट्रों के फैलाव के लिए एक मारक की आवश्यकता, उसके बाद हुए पाप, और कैसे परमेश्वर ने अपने सृजित करम में सभी लोगों के समूहों के लिए अपनी उद्धारक योजना को पूरा करने के लिए एक राष्ट्र को खड़ा किया, की और अग्रसर किया।

फरि, यह अब्राहम का परचिय है, और इसलिए कहानियों का अब्राहम चकर, वशिष रूप से एक बच्चे के जन्म से संबंधित है। तीन तत्व हैं जो अब्राहम वाचा को बनाते हैं जैसे परमेश्वर ने अब्राहम के साथ शुरू किया: नविस की भूमिया क्षेत्र, प्रजनन, एक महान राष्ट्र, और एक आशीर्वाद, जिसका अर्थ समृद्धि होगा। हम इस मामले में आशीर्वाद को अब्राहम और परमेश्वर के बीच व्यक्तिगत संबंध के रूप में सोच सकते हैं।

इसलिए, अब्राहम के साथ, वह अपने विश्वास की यात्रा शुरू करता है। सारै, उसकी पत्नी, बांझ है, और इसलिए यद्यपि वह सफलतापूर्वक एक अजनबी के रूप में कनान की भूमि में एक प्रवासी के रूप में रहता है, और यद्यपि वह एक आशीर्वाद है क्योंकि अब्राहम और लूत, उसके भतीजे, जो उसके साथ यात्रा करता है, के परिवार समूह में समृद्धि है, कोई बच्चा नहीं है, कोई वादा किया हुआ बेटा नहीं है, लेकिन भगवान उसे इसहाक देता है, और हमने अध्याय 21 में यह पाया। अध्याय 22 अब्राहम की आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण यात्रा को पूरा करता है।

अध्याय 12 से शुरू होकर, उसे अपने साथ की गई वाचा की घोषणा मिलती है। अध्याय 15 में, उस वाचा की औपचारिक पुष्टि होती है। और फरि अध्याय 17 में, वाचा का चनिह, खतना होता है।

लेकिन अध्याय 22 में, आपको याद होगा कि अब्राहम को अपने बेटे इसहाक को परमेश्वर की आराधना में बलदान के रूप में चढ़ाने की चुनौती दी गई थी। हमने सीखा कि यह एक परीक्षा थी। यह अब्राहम की वफादारी की परीक्षा थी, और यह परमेश्वर की ईमानदारी, चरित्र के बारे में भी एक परीक्षा थी।

और इसलिए, परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूत के द्वारा इसहाक को अब्राहम के चाकू से बचाया। आपको याद होगा कि यह पूरी परीक्षा इस बात को समझने के लिए तैयार की गई थी कि सिद्धांत में क्या था, और वह यह था कि अब्राहम परमेश्वर से प्रेम करता था और परमेश्वर के होने के कारण उससे प्रेम करता था, न कि परमेश्वर द्वारा किए गए सभी अद्भुत वादों के विपरीत। फरि, जब हम इसहाक के वृत्तांत पर आते हैं, तो हम पाते हैं कि इसहाक को अक्सर उसी तरह से प्रस्तुत किया जाता है जैसे हम अब्राहम के वृत्तांत को पढ़ते हैं।

और यह क्यों महत्वपूर्ण है? ऐसा इसलिए है क्योंकि अब्राहम से किए गए वादों में उसके वंशज भी शामिल हैं। और याद रखें कि वह सारा की दासी, इश्माएल का पिता था। उसका नाम मसिरी हागार था।

लेकिन परमेश्वर का वादा था कि एक बेटा होगा जो खास तौर पर सारा से आएगा। और इसलिए नाम बदलकर अब्राम से अब्राहम और फरि सारा से सारा कर दिया गया। सारा परमेश्वर के चमत्कारी हस्तक्षेप से एक बच्चे को जन्म देती है।

और इसलिए अब हम वादा किए गए बेटे से शुरू करते हैं। और इसहाक को जसि तरह से अब्राहम के सामने पेश किया गया है, वह परिवार की एकजुटता को दर्शाता है। यह अब्राहम और उसके वंशजों से परमेश्वर द्वारा किए गए वादों की एकजुटता और एकता को दर्शाता है।

खैर, मैंने कुछ ऐसे तरीके सूचीबद्ध किए हैं जिनमें इसहाक अब्राहम को दर्शाता है। एक यह है कि दोनों पुरुषों ने अपनी पत्नियों के अगली पीढ़ी के गर्भवती होने से पहले काफी समय तक इंतजार किया, सारा के मामले में, 25 साल।

हम इसहाक की पत्नी, जसिका नाम रेबेका है, के मामले में जानेंगे। हम उसकी कहानी सुनेंगे।

उसने 20 साल तक इंतज़ार किया।

इसलिए, उनके विश्वास और नषिठा के लिए एक वास्तविक चुनौती है। दूसरा यह है कि दोनों के प्रतिद्वंद्वी बेटे थे, इश्माएल और इसहाक। फरि, हमारे पास जुड़वा बच्चे हैं, जो रेबेका और इसहाक से पैदा हुए थे।

और वह याकूब और एसाव है। तीसरा यह है कि हमारे पास अबीमेलेक नाम के एक पलशित्ती राजा के साथ की गई संधियाँ हैं। और अध्याय 20 में, और फरि हम आज अध्याय 26 में देखेंगे, संधियाँ उसी स्थान, बेरशेबा में की गई थीं।

इसलिए, बेरशेबा में स्थिति स्थान पर इन दो कुलपतिओं, अब्राहम और इसहाक का भी नवास है। वे भी एक दुखद घटना में भागीदार हैं, और वह है अध्याय 20 और अध्याय 26 में राजाओं का धोखा। पत्नी-बहन का धोखा।

और फरि अंत में, प्रत्येक के दो बेटे थे जो बाहरी व्यक्ति थे। इश्माएल, वह एक बाहरी व्यक्ति था जो वास्तव में कनान में पाए जाने वाले मुख्य शहरों के बाहर अपनी स्थिति के लिए जाना जाता था। और फरि एसाव है, जिसे एक बाहरी व्यक्ति, एक शिकारी के रूप में दर्शाया गया है।

और वह याकूब के विपरीत है। इसलिए, इश्माएल इसहाक के विपरीत है। वे अलग-अलग भौगोलिक और स्थलाकृतिक स्थानों पर रहते हैं।

और एसाव और याकूब ने भी ऐसा ही किया। अब, इसहाक के परिवार के संघर्षों से संबंधित यह पाठ। याद रखें कि इसहाक वास्तव में आने वाली कहानियों का मुख्य पात्र नहीं है।

लेकिन इसहाक शुरुआती कहानियों में बहुत मौजूद है। उदाहरण के लिए, उसे अब्राहम के बेटे के रूप में देखा जाता है, और उसे जैकब के पिता के रूप में देखा जाता है। और यही उसकी प्रथमिक भूमिका है, उसकी परिवर्तनकारी भूमिका।

मैंने इसे पारिवारिक संघर्ष शीर्षक दिया है क्योंकि उसका परिवार प्रतिद्वंद्विता और पक्षपात के साथ आने वाली परेशानियों और धोखे और स्वार्थ के पापों के परिणामस्वरूप वनिशकारी चीजों को तेजी से दिखाएगा। इसलिए हम आज अध्याय 25, पद 19, अध्याय 27 से पद 40 के अधिकांश भाग को देखेंगे। याकूब के जीवन में मुख्य रूप से पाए जाने वाले संघर्षों को संक्षेप में प्रस्तुत करने का एक तरीका, कहानियों की यह श्रृंखला, वास्तव में एक भविष्यवक्ता को देखना है जो याकूब के संघर्षों का उल्लेख और संकेत करता है।

यह होशे के अध्याय 12 की आयत 3 और 4 में है। होशे ईसा पूर्व 700 के दशक में बोल रहा है। वह खास तौर पर उत्तरी राज्य इस्राएल को संबोधित कर रहा है। वह कभी-कभी 8वीं सदी यानी 700 के दशक में दक्षिणी राज्य यहूदा का भी जिक्र करता है।

दो अलग-अलग राज्य थे जो मलिकर बड़े इस्राइल का निर्माण करते थे। एक उत्तरी इस्राइल राज्य था और दूसरा दक्षिणी यहूदा राज्य। और फरि

700 ईसा पूर्व में परमेश्वर की इच्छा के प्रति उनके प्रतिरोध पर टपिपणी करते हुए, होशे ने उनके पति को एक उदाहरण के रूप में उद्धृत किया कि वे क्या बन गए हैं, और वह है याकूब।

और यह वास्तव में इस्राएल के बारे में बात करने का एक प्रभावी तरीका है क्योंकि हम पाएंगे कि याकूब का नाम बदलकर इस्राएल कर दिया जाएगा। इसलिए, उसके दो नाम होंगे। उसे कभी याकूब के नाम से पुकारा जाएगा, तो कभी इस्राएल के नाम से।

इसलिए, याकूब के बारह बेटों से निकले बारह गोत्र स्वाभाविक रूप से याकूब को उनके बारह गोत्रों और उनके राष्ट्र के पूर्वज के रूप में इंगित करेंगे। इसलिए, जब वे पैदल हैं, खासकर अब्राहम और फरि याकूब के बारे में, तो वे खुद को पीढ़ियों से इस्राएल के लोगों के रूप में देखते हैं। इसलिए, होशे, फरि, अध्याय 12, श्लोक 3 में, बोलता है कि हम इन आख्यानो में क्या पाएंगे।

ग्रभ में याकूब अपने भाई की एडी पकड़ता है। तो, ग्रभ के भीतर संघर्ष होता है। हम आज इसे रेबेका के बारे में जानेंगे। एक वयस्क के रूप में, एक आदमी के रूप में, उसने भगवान के साथ संघर्ष किया।

हम इसके बारे में अध्याय 32 में जानेंगे जहाँ याकूब के साथ परमेश्वर का प्रकट होना, उसका दर्शन होना है। इसलिए, उसने मानवता के साथ, अपने परिवार के साथ, अपने जुड़वां भाई के साथ संघर्ष किया, और फरि उसने परमेश्वर के साथ संघर्ष किया। होशे के अध्याय 12 की आयत 4 में आगे बताया गया है कि उसने स्वर्गदूत के साथ संघर्ष किया।

अब, यह दलितस्प है कि अध्याय 32 में परमेश्वर के साथ इस संघर्ष, इस कुशती की व्याख्या, होशे द्वारा प्रभु के दूत के रूप में समझी गई है। और हम देखेंगे कि स्वर्गदूत याकूब के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे अब्राहम के जीवन में थी। फरि यह श्लोक 4 में जारी रहता है जहाँ याकूब रोता है और परमेश्वर से अनुग्रह की भीख मांगता है।

उसने बेथेल में परमेश्वर को पाया, और याकूब ने भी बेथेल में परमेश्वर को पाया और वहाँ परमेश्वर से बात की। और इसलिए, अध्याय 28 में, जो हमारा अगला व्याख्यान होगा, हम एक स्वप्न परदिश्य देखेंगे जिसमें वह बेथेल में याकूब को देखेगा, प्रभु परमेश्वर की ओर से एक यात्रा। और परमेश्वर के उस प्रकटन में स्वर्गदूत भी शामिल होंगे।

तो फरि, आइए अध्याय 25 के इस भाग से शुरू करें। और हम अध्याय 25 में होने वाले जन्म और जन्मसिद्ध अधिकार की चोरी को देखना चाहते हैं। तो अध्याय 25 की आयत 19 से आयत 34 तक में इसहाक के जुड़वां लड़के।

तो, हम पाते हैं कि इसहाक 40 साल का था। उसने रेबेका से शादी की और रेबेका, आपको याद होगा, अब्राहम के नौकर द्वारा खोजी गई थी जो अरामी सेटगि में हारान गया था। मेसोपोटामिया के इस उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र को कभी-कभी सरिफ़ अराम या हारान कहा जाता है, कभी-कभी पदन नहरैम।

और कभी-कभी जैसा कि इस कहानी में पाया जाता है, श्लोक 20, पदन अराम, जिसका शाब्दिक अर्थ है अराम का मैदान। लेकिन यह उत्तर-पश्चिमी मेसोपोटामिया में है, दो महान नदियों, टगिरसि और यूफ्रेट्स के बीच की भूमि खैर, हमने सीखा कि रेबेका

इसहाक की पत्नी बन जाती है और वह बांझ है, लेकिन प्रभु इसहाक की प्रार्थना के माध्यम से हस्तक्षेप करता है।

अब, मध्यस्थता एक महत्वपूर्ण भूमिका है जो अब्राहम के पास है। उसे एक भविष्यवक्ता भी कहा गया है। और इसहाक ने प्रभु से प्रार्थना की, श्लोक 21, और प्रभु ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया।

और हम पाते हैं कि वह गर्भवती हो जाती है, और उसके गर्भ में पल रहे दो बच्चे उसके भीतर लड़ते-झगड़ते हैं। और यह इतना परेशान करने वाला रहा होगा कि उसे आश्चर्य हुआ होगा कि क्या हो रहा है। उसे शायद यह भी लगा होगा कि कहीं वह अपने बच्चों को खो तो नहीं देगी।

इसलिए, हमें बताया गया है कि वह प्रभु से पूछताछ करने गई थी। अब, क्या यह वह स्थान है जहाँ पुजारी से परामर्श किया गया होगा? या यह उसके पति के माध्यम से था? या उसने सीधे प्रभु से पूछताछ की? प्रभु ने जसि भी माध्यम से प्रार्थना की, उसका उत्तर दिया। यह हमारे लिए वचिर करने के लिए एक महत्वपूर्ण अंश है क्योंकि यह एक भविष्यवाणी होने जा रही है जो इन दो बच्चों के जन्म के परिणाम को निर्धारित करेगी।

आपके गर्भ में दो राष्ट्र हैं। बेशक, यह एक अलंकार है जहाँ राष्ट्र शब्द का इस्तेमाल प्रत्येक राष्ट्र के स्रोत के लिए किया जाता है। तो, प्रत्येक बच्चा एक राष्ट्र का निर्माण करेगा।

आपके भीतर से दो लोग अलग हो जाएँगे। एक समूह दूसरे से ज्यादा मजबूत होगा, और बड़ा समूह छोटे की सेवा करेगा। तो, यहाँ दो समूह हैं जो स्वतंत्र और अलग-अलग रहेंगे।

फिर, एक समूह के लोग, खास तौर पर, छोटे बच्चे के पास बड़े बच्चे की तुलना में ज्यादा ताकत और परमेश्वर के साथ एक मजबूत स्थिति होगी। इसलिए, जबकि बड़े बच्चे को वरिष्ठ और आशीर्वाद का पसंदीदा प्राप्तकर्ता माना जाता है, यह उलटा होने जा रहा है। आप पाएँगे कि रोमियों 9, आयत 10-12 में, प्रेरति पौलुस ने याकूब और एसाव के जीवन में इस घटना का उपयोग इस बात के उदाहरण के रूप में किया है कि कैसे परमेश्वर संप्रभुता से अपनी इच्छा को पूरा करता है और यह इस बात का एक स्पष्ट संकेत है कि कैसे यह परमेश्वर है जो अपनी योजना के कार्यान्वयन की देखरेख कर रहा है, यह उलटफेर है।

वह अपनी योजना को रीति-रिवाजों के अनुसार नहीं, बल्कि योग्यता के अनुसार और नश्चित रूप से चरित्र, धार्मिक चरित्र के अनुसार नहीं पूरा कर रहा है। क्योंकि याकूब चरित्रहीनता का एक बेहतरीन उदाहरण है और वह अपने चरित्र में नियमिता से वफिल होता है। हम अब्राहम के साथ भी यही देखते हैं, लेकिन जब याकूब की बात आती है, तो उसकी असफलताएँ नाटकीय होती हैं, और उसके बच्चे अपने पति के समान चरित्र अपनाते हैं।

इस तरह याकूब के बारे में और भी बहुत कुछ आना बाकी है। लेकिन प्रेरति पौलुस कहता है कि परमेश्वर ने याकूब को चुना, और उसने ऐसा अपनी खुशी और अपनी योजना के अनुसार किया। वहाँ, वह हमारी आयत को उद्धृत करता है, जो बड़ी इच्छा से छोटे की सेवा करने की बात करती है।

इसलिए, युवा लोग वृद्ध लोगों को वसिथापति करते हैं, और यह महत्वपूर्ण है, इन मानवीय मामलों में परमेश्वर की संप्रभुता को दर्शाता है। ऐसा नहीं है कि मानवता कठपुतली थी, बल्कि यह कि

परमेश्वर उनकी मानवीय जमिमेदारी को स्वीकार करने में सक्रिय था, लेकिन साथ ही साथ उनकी मानवीय जमिमेदार प्रतिक्रियाओं का उपयोग उद्धार की अपनी मास्टर योजना में बनाने के लिए करता था, न केवल इसराएल के लिए, बल्कि सभी राष्ट्रों के लिए भी। इस तरह के युवा लोग वृद्ध लोगों को वसिथापति करते हैं, यह हम पहले ही देख चुके हैं।

आपको याद होगा कसिेठ, कैन के वपिरीत, वंश की पसुंदीदा, चुनी हुई पंकतबिन जाता है। और यही बात इश्माएल और इसहाक के मामले में भी होती है। अब, हम पाएंगे के याकूब ने बड़े को वसिथापति कर दिया है।

अब जब बात उन दो बच्चों की आती है जिनका वरणन किया गया है, तो हम पाते हैं कि उनके नाम और उनकी शकल-सुरत के साथ खलिवाड़ किया गया है। उसके गर्भ में जुड़वां लड़के हैं। और यहाँ प्रेरति पौलुस के दृष्टिकोण से जो बात महत्वपूर्ण है वह यह है कि यह असहमता का मामला नहीं है क्योंकि यह धार्मिकता का मामला नहीं है क्योंकि वे जुड़वां थे।

और इसलिए, यह परमेश्वर का चुनावी उद्देश्य था कि उसने एक को चुना जिसके माध्यम से परमेश्वर के वादे पूरे होंगे। तो, यह इश्माएल और इसहाक की तरह नहीं है, जहाँ इश्माएल एक दासी से पैदा हुआ था, और इसहाक सारा से, जो वादा किए गए बेटे को जन्म देगी। लेकिन एक ही पति और एक ही माँ से पैदा हुए जुड़वां बच्चे हैं।

श्लोक 25 में लिखा है कि सबसे पहले जो बाहर आया वह लाल था। अब, यह हबिरू शब्द एदोम पर एक नाटक है क्योंकि वह एदोमियों का पति बन जाएगा। और वह उस नाम को भी धारण करता है।

तो, वह एसाव और एदोम दोनों है। एसाव खास तौर पर अपने बालों वाले शरीर, बालों वाले वस्त्र का संदर्भ दे रहा है। तो, वह लाल रंग का, एदोम था।

वह बालों वाला था, एसाव। जब जैकब की बात आती है, तो यह जैकब का एक सुखद चरित्र चित्रण नहीं है क्योंकि वह एसाव की एड़ी पकड़ रहा है। इसलिए, वह पहले स्थान के लिए लड़ रहा है।

जन्म के समय उसे प्रथम स्थान नहीं मिला। लेकिन बाद में, हम पाएंगे कि छल-कपट के माध्यम से उसे जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त होगा, और साथ ही, उसे इसहाक का आशीर्वाद भी मिलेगा और वह अनुग्रहित होगा। इसलिए, उसका नाम याकूब रखा गया।

और हबिरू शब्द जैकब की ध्वनि क्रिया के अर्थ को समझने के समान है। इसलिए उसका नाम जैकब रखा गया। वास्तव में, अध्याय 27, श्लोक 36 में, इस छल-कपट को पहचानने के बाद, आप पाएंगे कि एसाव अपने भाई जैकब के बारे में टपिपणी करता है।

एसाव ने कहा, क्या उसका नाम याकूब सही नहीं रखा गया है? उसने मुझे धोखा दिया है। अब, यहाँ धोखा दिया गया एक अलंकार है। इसका मतलब है कि उसने अपनी एड़ी पकड़ ली।

यह शाब्दिक है, लेकिन इसमें धोखे और छल का प्रतीकात्मक संकेत है। उसने मुझे इन दो बार धोखा दिया है। उसने मेरा जन्मसिद्ध अधिकार छीन लिया और अब उसने मेरा आशीर्वाद छीन लिया है।

तो चलए जन्मसदिध अधिकार और आशीर्वाद के बारे में बात करते हैं। जब जन्मसदिध अधिकार और आशीर्वाद की बात आती है, तो ये दोनों आम तौर पर एक ही व्यक्तियों को दिए जाते हैं। हमेशा नहीं।

हम देखेंगे कि इसे अलग किया जा सकता है। लेकिन आम तौर पर, जन्मसदिध अधिकार, यानी ज्येष्ठ पुत्र को वरिसत का सबसे बड़ा हिस्सा मिलता है। और यह आशीर्वाद इस ज्येष्ठ पुत्र को वह व्यक्ति बनाता है जो कुलपति के पति से सबसे बड़ा हिस्सा प्राप्त करता है।

अब, हम यह पता लगाएंगे कि जन्मसदिध अधिकार के इस वृत्तांत में, एसाव, एक बाहरी व्यक्ति के रूप में, शक्ति कर रहा है। हमें बताया गया है कि वह एक शक्ति है, एक कुशल शक्ति। दूसरी ओर, याकूब घरेलू है।

वह अपने पति के तम्बू में रह रहा है। और हमें बताया गया है कि इसहाक एसाव से प्रेम करता था। अब, इसहाक एसाव से प्रेम करता है क्योंकि वह अपने अनुग्रह की भावना, अपने आनंद की भावना के कारण प्रेम करता है।

और वह स्वादुष्ट शक्ति है, जंगली शक्ति जो एसाव उसके लिए लाया था। रेबेका, आपको आश्चर्य नहीं होगा, वह जैकब से प्यार करती थी। आखिरकार, जैकब ज्यादातर समय उसकी नज़र में रहता था, तंबुओं में रहता था।

इसलिए, यह पक्षपात समस्यामूलक और परेशानी भरा साबित होगा, क्योंकि दोनों भाई पहले से ही एक-दूसरे के वरिधी हैं। यह उनका स्वभाव है। लेकिन अब यह उनके माता-पिता के प्यार से और भी बढ़ गया है।

यह उनके अलग-अलग व्यवसायों से और भी बढ़ जाता है। फिर, यहाँ हमारे पास वह पूरकरण है जो महत्वपूर्ण है क्योंकि एसाव बेचने जा रहा है - वास्तव में, यह एक वस्तु विनिमय है, माल के लिए माल, उसका जन्मसदिध अधिकार। अब, क्या होता है कि एसाव आता है, और वह भूखा है।

हमें इस बात पर जोर देना होगा। यह कोई सामान्य भूख नहीं है। यह एक ऐसी भूख है जिसका मतलब उसकी खुद की मौत हो सकती है।

यानी, वह भूखा मर रहा है। और आपको यह एहसास होता है कि वह अपने शक्ति में सफल नहीं हो पाया है। और इसलिए वह याकूब के पास आता है, जो तैयारी कर रहा है, और यहाँ एक वडिंबना है, लाल सूट, जैसा कि हमें श्लोक 30 में बताया गया है।

इसलिए, हमारे पास न्यू इंटरनेशनल वर्शन में एक पैरेन्थेटिकल स्टेटमेंट है। श्लोक 30 में लिखा है, इसीलिए उसे एदोम भी कहा जाता था, क्योंकि यहाँ के सूट की लाली, आपको याद होगी, लेकिन उसके रंग की वजह से भी। शायद उसके बालों की वजह से।

ठीक है, तो याकूब अपने भाई का फायदा उठाने का मौका देखता है। अब, आप इसे इस बात के लिए जिम्मेदार ठहरा सकते हैं कि, ओह, वह चालाक है, वह बुद्धिमान है, लेकिन इसे समझने का बेहतर तरीका, मुझे लगता है, याकूब और उसके चरित्र के बारे में पूरी कहानी के संदर्भ में, यह है कि वह, यानी एक धोखेबाज के रूप में, वह एक उतसाही व्यक्ति था, वह महत्वाकांक्षी था, और जैसा कि मैंने कहा, वह एक चालबाज था। इसलिए, वह कहता है, मुझे अपना जन्मसदिध अधिकार बेच दो।

और इसीलिए एसाव कहता है, देखो, मैं मर सकता हूँ, या मैं अपना जन्मसिद्ध अधिकार खो सकता हूँ। हो सकता है कि उसने इस नरिणयु के परिणामों का आकलन न किया हो क्योंकि वह एक नरिशोजनक स्थिति में था। मुझे लगता है कि वह वास्तव में याकूब के धोखे का फायदा उठाता है, यहाँ तक कि उसका शिकार भी बन जाता है।

तो, दोनों के बीच एक व्यापार होता है। याकूब को जन्मसिद्ध अधिकार मिला है, और फरि एसाव को भोजन मिला है जो उसे जीवित रखता है। अब, वर्णनकर्ता हमें श्लोक 34, अंतिम भाग में बताता है, इसलिए एसाव ने अपने जन्मसिद्ध अधिकार को तुच्छ जाना।

तो, उत्पत्ति के विवरण के परिप्रेक्ष्य से, लेखक, यहाँ कथावाचक के माध्यम से, हमें बता रहा है कि एसाव भी, भले ही पीड़ित था, वह दोषी है, क्योंकि उसने अपनी नरिशोजनक स्थिति को जन्मसिद्ध अधिकार से ऊपर रखा। और बड़े बेटे के रूप में, वह उस जन्मसिद्ध अधिकार को बनाए रखने के लिए ज़िम्मेदार था। इसलिए, हम इसे ध्यान में रखना चाहते हैं।

मैं आपको कुछ ऐसे अंश बताऊंगा जो जन्मसिद्ध अधिकार के महत्व के बारे में बताते हैं। और यह व्यवस्थाविवरण अध्याय 21, श्लोक 17 में पाया जाता है, जहाँ सबसे बड़े बेटे को वरिसत का दोगुना हिस्सा मिला। इसका मतलब यह होगा कि छोटे बेटे, या दूसरे बेटे और तीसरे बेटे, वरिसत का हिस्सा प्राप्त कर सकते हैं।

यशायाह 61, पद 7, भविष्य के पुनरस्थापति इसराएल के लिए भी यही उल्लेख करता है, उसके नरिवासन और पुनरस्थापना के बाद, कि उसे परमेश्वर के आशीर्वाद का दोगुना हिस्सा मिला। नए नरियम में, परेरति पौलुस उन प्राचीनों को दोगुना आशीर्वाद, दोगुना वरिसत और दोगुना भुगतान देने का उल्लेख करता है जो प्रभावी रूप से और अच्छी तरह से शासन करते हैं। यह 1 तीमुथियुस 5, पद 17 में पाया जाता है।

1 तीमुथियुस 5, पद 17, अब हम अध्याय 26 पर जा सकते हैं, और आप देख सकते हैं कि इसहाक और पलाशितियों के राजा अबीमेलक के बीच गैरार में रशिते के बारे में एक अच्छा लंबा खंड दिया गया है। तो, यह अध्याय 26, पद 1 से लेकर अध्याय के अंत, पद 34 तक चलेगा।

फरि हम अध्याय 27 पर जाते हैं, जो आशीर्वाद की चोरी से संबंधित है। लेकिन मैं इसहाक और अबीमेलक के बारे में कहूंगा कि अबीमेलक नाम अध्याय 20 में पाया जाता है, जो पलाशितियों का राजा भी था। अब, अब्राहम के अबीमेलक के साथ संबंध और इसहाक और अबीमेलक के बीच समय अंतराल के कारण, हमारे पास यहाँ जो है वह संभवतः फरिोन जैसा शीर्षक है।

यह एक शासकीय उपाधि है। यह संभवतः एक ही व्यक्ति नहीं है। और इसलिए, मुझे लगता है कि यह नषिकर्ष नकिलना आवश्यक नहीं है कि हमारे पास पत्नी-बहन के धोखे के बाद संघर्ष के दो परस्पर वैरिधी विवरण हैं।

लेकिन हम शासक उपाधियों के आधार पर समानता रखते हैं। समानता यह हो सकती है कि चूँकि अब्राहम ने अपनी पत्नी का इस्तेमाल धोखे की योजना में किया था, ताकि

उसका अपना जीवन सुरक्षित रहे, इसहाक ने भी यह सीखा होगा, जैसे पति वैसा बेटा। और उसने इसका इस्तेमाल भी किया।

अध्याय 26 में हमें बताया गया है कि देश में अकाल पड़ा था, और जब ऐसा हुआ तो अब्राहम मसिर चला गया, लेकिन जब इसहाक की बात आती है, तो उसे प्रभु द्वारा विशेष रूप से मसिर न जाने के लिए कहा जाता है, बल्कि देश में ही रहने के लिए कहा जाता है, इस देश में कुछ समय के लिए रहने के लिए, और मैं तुम्हारे साथ रहूँगा और तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। यह श्लोक 2 में पाया जाता है। इस अनुच्छेद में जो कुछ भी आता है वह वास्तव में उस वाचा के आशीर्वाद का दोहराव और वसितार है जो परमेश्वर ने अब्राहम के साथ किया था। और यह, निश्चित रूप से, जैसा कि मैंने शुरू में कहा, अब्राहम के वंशजों को दिए गए वादों की एकता और एकजुटता से संबंधित है।

इसलिए, हमें श्लोक 6 में बताया गया है, और इसहाक गेरार में रहा, जो कपिलशितियों के शहरों में से एक था। हम बाद में जानेंगे, जैसा कि आप ऐतिहासिक पुस्तकों में पेंटाटयुक के माध्यम से पढ़ते हैं, कपिलशितियों ने कनान में एक शक्तिशाली प्रभाव बनाया। वे एजिप्ट से आते हैं।

उन्होंने पाँच शहर बसाए, जिनमें सबसे प्रसिद्ध गाजा है। गेरार भी पेंटापोलिस का एक प्रभावशाली सदस्य था, जो फलिसितीनियों के पाँच शहरों में से एक था। इस समय, पाँच शहरों का कोई उल्लेख नहीं है।

यह एक पहले की अवधि है। यह संभवतः पलशितियों के लोगों का एक प्रारंभिक प्रवास है, शायद पलशितियों से संबंधित है जिनके बारे में हम राजशाही के समय में अधिक जानते हैं, लेकिन वे प्रत्यक्ष वंशज के विपरीत सापेक्ष हैं। उनका संबंध है, लेकिन बिल्कुल समान लोगों के समूह के रूप में नहीं।

इसलिए, जब वह गेरार में होता है, तो वे उसकी पत्नी रेबेका के बारे में पूछते हैं, और बेशक, वह उन्हें धोखा देता है: वह मेरी पत्नी है। और यही बात यहाँ भी काम करती है। उसे डर है कि उसे मार दिया जाएगा ताकि उसकी पत्नी अपने पति से मुक्त हो जाए और उसे राजा अबीमेलक के हरम में ले जाया जाए।

खैर, जबकि अब्राहम ने एक सपना देखा था, यहाँ वह है, यानी, अबीमेलक ने अध्याय 20 में अब्राहम के साथ एक सपना देखा। यहाँ वह पाता है, वह नीचे देखता है, यह कहता है, एक खड्की से, श्लोक 8 में, उसने देखा कि इसहाक अपनी पत्नी, रेबेका को दुलार रहा है। दूसरे शब्दों में, इसमें जो कुछ भी शामिल था, यह रेबेका के प्रति उसकी ओर से एक यौन, स्पष्ट रूप से यौन क्रिया थी।

इसलिए, अबीमेलक ने उसे अंदर बुलाया और उसकी जांच की, पूछताछ की, और इस बात से इतना व्याकुल हो गया कि उसे डर था कि उसके दरबार में मौजूद पुरुषों में से कोई उसके साथ यौन संबंध बना लेगा। बेशक, जैसा कि हमने अब्राहम और सारा के मामले में पाया, इससे वादा किए गए बेटे की वरिसत की धारणा जटिल हो जाएगी। इसलिए, राजा अबीमेलक ने सारा के साथ किसी के भी संबंध बनाने पर प्रतिबंध लगा दिया।

अब, इसहाक उल्लेखनीय रूप से समृद्ध होता है। ऐसा कहा जाता है कि परभु ने उसे आशीर्वाद दिया, और हर साल, वह अपनी फसलों से सौ गुना अधिक फसल काटता था, जो कि ख़ुद पलाशियों की अपेक्षा बहुत अधिक थी। इतना अधिक कि अबीमेलक चाहता था कि वह दूर चला जाए क्योंकि वह कृषि योग्य भूमि को बहुत अधिक हिससा ले रहा था। इसहाक के सेवकों और इसहाक के चरवाहों के बीच भी झगड़ा हुआ, और इसलिए एक समय ऐसा आया जब उसे आखरिकार एक जगह मलि गई जहाँ वह रह सकता था, एक कुआँ खोद सकता था, और फल-फूल सकता था, जैसा कि हमें श्लोक 22 में बताया गया है।

उन्होंने इस नए क़ाँ का नाम रेहोबोत रखा, और कहा, अब परभु ने हमें एक कमरा दिया है। रेहोबोत का अर्थ है कमरा, स्थान, और इसलिए अब परभु ने हमें कमरा दिया है, और हम फलेंगे-फलेंगे, और वास्तव में उन्होंने ऐसा किया। तो हम इसहाक की ओर से आराधना का एक कार्य पाएँगे, और फरि पद 26 में, अबीमेलक द्वारा एक संधि का सुझाव दिया गया है क्योंकि वे पहचानते हैं, और यह महत्वपूर्ण है, वाचा का वादा: जो तुम्हें आशीर्वाद देंगे वे आशीर्वादति होंगे, जो तुम्हें शाप देंगे वे शापति होंगे, और अब, जबकि अबीमेलक और उसके चरवाहों ने इसहाक को असवीकार कर दिया था, वे अब पहचानते हैं, परमेश्वर वास्तव में इस आदमी को आशीर्वाद दे रहे हैं, हम एक संधि में प्रवेश करके अच्छा करेंगे, और इसलिए वे ऐसा करते हैं, और यह इस मान्यता के कारण है कि हमें पद 29 में बताया गया है, वे इसहाक से कहते हैं, हम तुम्हें परेशान नहीं करेंगे, हम तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे यदि तुम हमें परेशान नहीं करोगे, और इसलिए अब तुम धन्य हो, वे कहते हैं, परभु द्वारा। इसलिए, वे एक कुआँ दूँदते हैं, उसे खोदते हैं, और इसे शेवा के रूप में पहचाना जाता है, जिसका अर्थ है सात या शपथ।

यहाँ, इसका सम्बन्ध शपथ से है। सात एक प्रतधिवन है, एक संदर्भ है, यदि आपको याद हो, तो अध्याय 20 में सात मादा मेमनों का जो अबीमेलक और अब्राहम के बीच औपचारिक संधि का हिससा था, और प्रत्येक स्थान पर, आपको उस स्थान का नाम, बेरशेबा मलिता है। इसलिए, बेरशेबा में वास्तव में दो वचारे हैं, सात या शपथ।

अब, श्लोक 34 महत्वपूर्ण है क्योंकि जब एसाव 40 वर्ष का था, उसने हतिती पत्नियों से विवाह किया, और यह इसहाक और रबिका को बलिकुल भी अच्छा नहीं लगा क्योंकि हतिती पत्नियों हतिती देवताओं को परिवार में ले आती थीं। आपको याद होगा कि अब्राहम और उसके सेवक की ओर से हारान के पारिवारिक घर वापस जाने, एक सच्चे याहवसिट उपासक को वापस लाने और इस प्रकार, एक ऐसे परिवार की महत्वपूर्ण वाचा संबंध स्थापति करने के लिए बहुत प्रयास किए गए थे जो न केवल परिवार समूह के भीतर विवाहित है, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वह याहवे के प्रति अपनी नषिठा बनाए रखेगा, जो कि बहुविवाह के खतरों के विपरीत है, जिसका एसाव और उससे पहले इश्माएल ने भी अभ्यास किया था, और फरि, निश्चिती रूप से, बहुदेववाद। यह हमें, फरि, हमारे लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण मार्ग पर लाता है, और वह है आशीर्वाद और यह कैसे काम करता है।

तो, याकूब कुलपति का आशीर्वाद चुरा लेगा। यह अध्याय 27 से 40 तक की आयत है। तो, आशीर्वाद शब्द इस अंश में 15 बार बार-बार आता है, और फरि शाप शब्द दो बार आता है।

यह श्लोक 12 और 13 में है। इसलिए, आशीर्वाद-शाप की भावना उत्पत्तिके पहले अध्यायों से याद की जाती है। अब, मूल रूप से जो होता है, आप याद करें, इसहाक ने एसाव द्वारा लिए गए भोजन का आनंद लिया, और जंगली शकियर जो काफी अच्छी तरह से तैयार किया गया था।

यह स्वादषिट भोजन माना जाता है। और फरि वह कहता है, मैं तुम्हें आशीर्वाद दूंगा, एसाव। वह कहता है कि मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ।

अब समय आ गया है कि मैं तुम्हें आशीर्वाद प्रदान करूँ। और इसलिए, आशीर्वाद के उत्सव के एक भाग के रूप में, इसके औपचारिक पहलू के रूप में, हम पाते हैं कि यही वह कार्य है जो एसाव को दिया गया है। इस बीच, रबिका को यह बात पता चलती है और वह अपना खुद का बेटा चाहती है, जैसी वह प्यार करती है।

ऐसा लगता है जैसे याकूब उसका बेटा है और एसाव नहीं। लेकिन, जाहरि है, ऐसा नहीं है। याकूब के पास रबिका आती है और कहती है, अब, हमें एसाव से पहले आशीर्वाद पाने का कोई तरीका निकालना होगा।

अध्याय 27, श्लोक 1 में हमें बताया गया है कि जब इसहाक बूढ़ा हो गया था और उसकी आँखें इतनी कमजोर हो गई थीं कि वह अब देख नहीं सकता था, यही मुख्य बात है, कि यह धोखा कैसे हो सकता है। तो, धोखा वास्तव में होता है। और यह कैसे संभव होने जा रहा है? याकूब सही ढंग से समझता है, अगर मेरे पति को पता चल जाता है कि मैं याकूब हूँ और एसाव नहीं, तो वह मुझे शाप देगा।

वह कहता है कि पद 12 में आशीर्वाद के बजाय अभिशाप होगा। पद 13 कहता है, मेरे बेटे, अभिशाप मुझे पर पड़े। खैर, मुझे लगता है कि यह याकूब के लिए पर्याप्त रूप से आश्वस्त करने वाला था, लेकिन मुझे नहीं लगता कि बेटे के बर्ना माँ पर अभिशाप कैसे पड़ सकता है।

लेकिन यही उसका तर्क है। और इसलिए, यह इस तरह से होता है। और वह यह है कि वह झुंड से स्वादष्ट भोजन तैयार करने जा रही है।

वह झुंड से जानवरों की ऊन लेकर जैकब के हाथों और बाहों पर यह ऊन लगाकर उसे तैयार करेगा ताकि बकरी की खाल और उसकी गर्दन बालों वाले शरीर की नकल करे। और यही वह छल है जो इसमें शामिल है। अब, जब इस धोखे की जम्मेदारी की बात आती है, तो कुलपिताओं के जीवन में ऐसा दुःखद प्रकरण, कि इस तरह का पीढ़ी-दर-पीढ़ी धोखा परिवार के भीतर हो रहा है, यह हमें यह आभास देता है कि परमेश्वर ऐसे परिवार, इस तरह के परिवार के माध्यम से उद्धार का कार्य कैसे कर सकता है।

लेकिन हम देखेंगे, यह याकूब की आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत मात्र है, और वह अपने अनुभवों से परिवर्तित हो जाएगा। और हम देखेंगे कि यह अब्राहम के मामले जैसा है, जो देश में अपनी यात्रा के दौरान कुछ समय के लिए परमेश्वर से मिलता है, वह परभु के साथ उस व्यक्तिगत संबंध में बढ़ रहा है और अधिक विश्वास और धार्मिकता में बढ़ रहा है। इसलिए, हम सभी चार पक्षों को जम्मेदार पाते हैं।

सबसे पहले, माता-पिता पक्षपात करते हैं। इसहाक आशीर्वाद दे सकता था। याद रखें, बच्चों को एक से ज्यादा बार आशीर्वाद देने का प्रावधान किया गया है।

वह उन दोनों को बुला सकता था। वह एसाव और याकूब को आशीर्वाद दे सकता था। रेबेका ने इसहाक को धोखा दिया, और यही उसका अपराध है।

और फरि हम देखते हैं कय्याकूब बार-बार झूठ बोलता है। जहाँ तक रेबेका को याद है, उसे गर्भ में ही यह भवषियवाणी प्राप्त हुई थी, लेकिन वह परमेश्वर द्वारा इस भवषियवाणी को पूरा करने की प्रतीक्षा करने से संतुष्ट नहीं थी कि छोटा बड़े पर शासन करेगा। बल्कि, वह मानवीय नवाचार, अपने पति के हेरफेर का उपयोग करना चाहती थी।

और जैसा कि मैंने कहा, याकूब बार-बार झूठ बोलता है। उदाहरण के लिए, श्लोक 19 में, यह कहा गया है, मैं तुम्हारा जेठा पुत्र एसाव हूँ। यह झूठ है।

और इसलिए, इसहाक कहता है, "तुमने यह भोजन कैसे पाया और इसे इतनी जल्दी कैसे तैयार किया?" दूसरा झूठ। तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मुझे सफलता दी। उसने उत्तर दिया, यह श्लोक 20 है।

और आप बता सकते हैं कि इसहाक को संदेह है। श्लोक 24: क्या तुम सच में मेरे बेटे एसाव हो? यह उसका तीसरा झूठ है। मैं हूँ, उसने उत्तर दिया।

तो, याकूब निश्चिन्त रूप से दोषी और सहभागी है। एसाव के बारे में क्या? क्या वह पूरी तरह से पीड़ित है? खैर, पूरी तरह से नहीं। मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि हित्ती महिलाओं से विवाह वास्तव में रबिका की नसों को परेशान करता था और हो सकता है कि इसने रबिका की अपने बेटे के साथ आशीर्वाद देखने की इच्छा को और बढ़ा दिया हो।

और अगर आप अध्याय 27, श्लोक 46 में देखें, तो यह कहता है, तब रबिका ने इसहाक से कहा, मुझे जीने से घृणा हो गई है। नहीं, वह कहती है कि वह इन हित्ती महिलाओं की वजह से जल्द ही मर गई। अगर याकूब इस देश की महिलाओं में से, इन जैसी हित्ती महिलाओं में से किसी एक को पत्नी बनाता है, तो मेरा जीवन जीने लायक नहीं रहेगा।

खैर, शायद अतशियोकता और अतशियोकता फरि भी, यह आपको घृणा की गहराई और उसके बेटे के व्यवहार के प्रति वास्तव में अस्वीकृति को दर्शाता है और हो सकता है कि आशीर्वाद की चोरी में जो कुछ हुआ, उसमें किसी तरह से योगदान दिया हो। तो यहाँ श्लोक 27 में आशीर्वाद है।

और यह आशीर्वाद व्यापक रूप से है, लेकिन यह उसकी समृद्धि की बात कर रहा है। आह, मेरे बेटे की गंध उस खेत की गंध है जैसा भगवान ने आशीर्वाद दिया है। खैर, बेशक, वह एसाव के बारे में सोच रहा है।

ईश्वर तुम्हें स्वर्ग की ओस और धरती की समृद्धि से भरपूर अनाज और नई शराब दे। बेशक, यह भूमि और उत्पादकता का उत्कर्ष होगा। और फरि, जब लोगों के समूहों की बात आती है, श्लोक 29, मेरा राष्ट्र आपकी सेवा करता है, और लोग आपके सामने झुकते हैं।

अपने भाइयों पर प्रभु बनो, और तुम्हारी माँ के बेटे तुम्हारे सामने झुकें। जो लोग तुम्हें शाप देते हैं वे शापित हों और जो लोग तुम्हें आशीर्वाद देते हैं वे आशीर्वाद पाएं। खैर, यहाँ बड़ी वडिंबना यह है कि यह आशीर्वाद एसाव के लिए नहीं बल्कि याकूब के लिए आता है।

याकूब परिवार में समृद्ध होता है। उसके 12 बेटे और एक बेटी है और वह बहुत समृद्ध होता है। और फिर उसका भाई एसाव राष्ट्रीय प्रभाव के मामले में अपने भाई याकूब के बाद दूसरे स्थान पर आ जाएगा जैसा कि आप इस्राएलियों और एदोमियों के इतिहास का पता लगाते हैं।

अब, हम इस बात पर आते हैं कि एसाव ने क्या जवाब दिया? और एसाव ने जवाब देते हुए कहा, पति, क्या आपके पास मेरे लिए कोई आशीर्वाद नहीं है? क्या कुछ बचा हुआ नहीं है? और वास्तव में, जब आप इसहाक द्वारा एसाव को दिए गए आशीर्वाद को पढ़ते हैं, तो यह एक वरिधी आशीर्वाद की तरह लगता है। इसलिए, एसाव अपने पति से कहता है, श्लोक 38, क्या आपके पास केवल एक आशीर्वाद है, मेरे पति? सुझाव है कि उसके पास कई आशीर्वाद हो सकते थे। मुझे भी आशीर्वाद दें, मेरे पति।

तब एसाव जोर से रोने लगा। उसके पति ने उत्तर दिया, " तुम्हारा नविस पृथ्वी की समृद्धि से दूर होगा, ऊपर आकाश की ओर से दूर होगा। देखो, यह एक वरिधाभास है।

तुम तलवार से जीओगे। तुम तलवार से सेवा करोगे।

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज की उत्पत्तिका पुस्तक पर उनकी शक्ति है। यह सत्र 16 है, इसहाक का पारिवारिक संघर्ष, उत्पत्तिका 25:19-27: 40।